

सांप्रदायिक हिंसा की नरंतरता

यह एडिटरियल 07/08/2023 को 'हडिस्तान टाइम्स' में प्रकाशित ["Clashes will exact a stiff economic cost"](#) लेख पर आधारित है। इसमें भारत में बढ़ती सांप्रदायिकता के बारे में चर्चा की गई है।

प्रलिस के लिये:

[मोपला वद्रोह, 1921, वर्ष 1947 के वभिजन संबंधी दंगे, लोकतंत्र, पंथनरिपेकषता, मानवाधकार](#)

मेन्स के लिये:

[हेट स्पीच](#), भारत में सांप्रदायिक हिंसा के कारण।

[सांप्रदायिक हिंसा \(Communal violence\)](#) सामूहिक हिंसा का एक रूप है जिसमें **भन्न-भन्न धार्मिक, जातीय, भाषाई या कषेत्रीय पहचान से संबंधित समूहों के बीच झड़पें शामिल होती हैं।**

भारत में सांप्रदायिक हिंसा को प्रायः हिंदू-मुसलमि संघर्ष के संदर्भ में देखा जाता है, लेकिन इसमें **सखि, ईसाई, बौद्ध, दलित और आदवासी जैसे अन्य समूह भी शामिल हो सकते हैं।**

भारतीय दंड संहिता (IPC) सांप्रदायिक हिंसा को कसी भी ऐसे कृत्य के रूप में परभाषित करती है जो धर्म, जाति, जन्म स्थान, नवास, भाषा आदि के आधार पर वभिन्न समूहों के बीच शत्रुता को बढ़ावा देता है और सद्भावना बनाए रखने के प्रतिकूल कार्य करता है।

भारत में सांप्रदायिक हिंसा का एक लंबा इतहास रहा है, जो पूर्व-औपनवशिक और औपनवशिक काल से चला आ रहा है। स्वतंत्रता के बाद के युग में भी सांप्रदायिक हिंसा ने भारत के लिये समस्या बनाए रखी है। **वर्ष 1921 का मोपला वद्रोह, 1946 का नोआखली दंगा, 1947 का वभिजन दंगा, 1992 का बाबरी मसजद वधिवंस और हाल ही में मणपुरि हिसा तथा नूह में फैली हिसा सांप्रदायिक हिंसा की घटनाओं के उदाहरण के रूप में देखे जा सकते हैं।**

सांप्रदायिक हिंसा प्रायः राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक या सांस्कृतिक कारणों से उत्प्रेरित होती है जैसे चुनाव, धार्मिक त्योहार, गोरक्षा, धर्मांतरण, अंतर-धार्मिक ववाह, भूमि ववाद, प्रवास, मीडिया प्रोपेगंडा, हेट स्पीच आदि।

सांप्रदायिक हिंसा का भारत के [लोकतंत्र](#), [पंथनरिपेकषता](#), [मानवाधकार](#), सामाजिक सद्भाव, राष्ट्रीय सुरक्षा और विकास के लिये गंभीर नहितार्थ है।

भारत में सांप्रदायिक हिंसा के प्रमुख कारण:

- राजनीतिक कारण:
 - चुनावी लाभ या वैचारिक एजेंडे के लिये सांप्रदायिक भावनाओं की लामबंदी करने में राजनीतिक दलों और नेताओं की भूमिका।
 - बाँटो और राज करो (divide and rule) की रणनीति के रूप में सांप्रदायिक ध्रुवीकरण का उपयोग।
 - सांप्रदायिक संघर्षों को रोकने या हल करने में राजनीतिक संस्थानों और तंत्रों की वफलता। सांप्रदायिक हिंसा के अपराधियों के लिये जवाबदेही की कमी और दंड से मुक्ति।
- सामाजिक कारण:
 - वभिन्न समुदायों के प्रती गहरी जड़ें जमा चुके **पूर्वाग्रहों और रूढ़ियों का असत्त्व**।
 - अंतर-सामुदायिक संवाद और भरोसे की कमी।
 - चरमपंथी समूहों और संगठनों का प्रभाव जो सांप्रदायिक घृणा और हिंसा फैलाते हैं।
 - सांप्रदायिक उद्देश्यों के लिये धार्मिक प्रतीकों और भावनाओं से खलिवाद।
- आर्थिक कारण:
 - वभिन्न समुदायों के बीच **दुर्लभ संसाधनों और अवसरों के लिये प्रतस्पर्धा**।

- हाशयि पर रहने वाले समूहों के बीच सापेक्षिक अभाव या भेदभाव की धारणा ।
- पारंपरिक आजीविका एवं पहचान पर वैश्वीकरण और आधुनिकीकरण का प्रभाव ।
- सांस्कृतिक कारक:
 - विभिन्न समुदायों के बीच मूल्यों और जीवनशैली का टकराव । सांस्कृतिक विविधता और बहुलवाद (pluralism) का क्षरण ।
 - रूढ़िवाद को धर्मनिरपेक्षता और उदारवाद द्वारा दी गई चुनौती । सांस्कृतिक विरासत और पवित्र स्थलों का वनियोग या अपमान ।
- शिक्षा और जागरूकता का अभाव:
 - भ्रामक सूचनाओं का आसानी से प्रसार हो सकता है, ये अविश्वास और गलतफहमी को गहरा कर सकती हैं और अंततः सांप्रदायिक हिसा भड़काने में योगदान दे सकती हैं ।

भारत में सांप्रदायिक हिसा के प्रभाव:

- मानव जीवन की हानि:
 - सांप्रदायिक हिसा के सबसे वनिशकारी परिणामों में से एक है मानव जीवन की हानि व्यक्ति, परिवार और संपूर्ण समुदाय ऐसी हत्याओं से टूट जाते हैं और ये ऐसे घाव छोड़ जाते हैं जो पीढ़ियों तक बने रहते हैं ।
- संपत्तिका वनिश:
 - सांप्रदायिक हिसा घरों, व्यवसायों और पूजा स्थलों के वनिश का कारण बनती है ।
 - इस वनिश से होने वाली आर्थिक क्षति बहुत अधिक भी हो सकती है, जो व्यक्तियों और समुदायों की आजीविका को प्रभावित कर सकती है ।
- सामाजिक विघटन:
 - विभिन्न समुदायों के बीच सामाजिक संसंजन, सहिष्णुता, एकजुटता आदि का टूटना या कमजोर पड़ना ।
 - विश्वास और एकता का वह ताना-बाना जो समाज को एक साथ बांध कर रखता है, प्रायः सांप्रदायिक हिसा से टूट जाता है ।
 - जो समुदाय कभी सदभाव में रहते रहे थे, वे स्वयं को धार्मिक आधार पर विभाजित पाते हैं, जिससे कबंधन नष्ट हो जाते हैं जो उन्हें एक साथ बांधे रखते हैं ।
- आर्थिक आघात:
 - सांप्रदायिक हिसा के महत्त्वपूर्ण आर्थिक प्रभाव उत्पन्न हो सकते हैं । संसाधनों और धन का वचिलन या बर्बादी इसका एक प्रमुख प्रभाव है ।
 - नविशक हिसाग्रस्त क्षेत्रों में नविश करने से संकोच रख सकते हैं, आर्थिक गतिविधियाँ बाधित हो सकती हैं और विकासात्मक परियोजनाएँ पटरी से उतर सकती हैं, जिससे प्रगति और विकास की गति भंद पड़ सकती है ।
- मनोवैज्ञानिक प्रभाव:
 - सांप्रदायिक हिसा से होने वाला मानसिक आघात शारीरिक क्षति से कहीं अधिक व्यापक होता है ।
 - उत्तरजीवी (Survivors) प्रायः मनोवैज्ञानिक संकट, दुश्चिंता और अवसाद का अनुभव करते हैं, जिससे उनकी समग्र सेहत और पूरुणता से जीवन जीने की क्षमता प्रभावित होती है ।
- राजनीतिक प्रभाव:
 - भारत में लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता, कानून का शासन, न्याय आदि का क्षरण या उनका कमजोर पड़ना । राजनीतिक संस्थानों और अभिकर्ताओं की वैधता एवं विश्वसनीयता की हानि ।
 - राजनीतिक प्रक्रियाओं में भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद, संरक्षण, हिसा आदि में वृद्धि । तानशाही, लोकलुभावनवाद, उग्र राष्ट्रवाद, सांप्रदायिकता आदि का उदय या पुनरुत्थान ।
- सुरक्षा पर प्रभाव:
 - राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा के लिये खतरा या चुनौती ।
 - सांप्रदायिक झगड़ों में बाहरी तत्त्वों या शक्तियों की भागीदारी या हस्तक्षेप ।
 - सांप्रदायिक हिसा का सीमाओं के पार प्रसार या वृद्धि
 - सांप्रदायिक हिसा और हिसा के अन्य रूपों—जैसे आतंकवाद, विद्रोह, उग्रवाद आदि के बीच संबंध या सांठगांठ । हथियारों और वसिफोटकों का प्रसार या दुरुपयोग ।

सांप्रदायिक हिसा को रोकने के लिये संभावित समाधान:

- सुदृढ़ कानूनी ढाँचा:
 - विभिन्न समुदायों के अधिकारों और हितों की रक्षा करने वाले कानूनों और नीतियों का अधिनियमन या प्रवर्तन ।
 - हेत सपीच, घृणापूरण अपराध, सांप्रदायिक दंगों आदि की रोकथाम या नषिध । सांप्रदायिक हिसा के अपराधियों या इसे भड़काने वालों पर मुकदमा चलाना और उन्हें दंडित करना ।
 - सांप्रदायिक हिसा के पीड़ितों या उत्तरजीवियों के लिये न्याय या राहत का प्रावधान या मुआवज़ा ।
- संस्थागत तंत्र को सुदृढ़ करना:
 - सांप्रदायिक मुद्दों को हल करने वाले राजनीतिक संस्थानों और तंत्रों को सुदृढ़ करना या उनमें सुधार लाना ।
 - सांप्रदायिक हिसा की नगिरानी या जाँच करने वाले स्वतंत्र या नषिपक्ष नकियों या एजेंसियों की स्थापना और उनका सशक्तीकरण ।
 - शासन में पारदर्शिता, ज़मिमेदारी, जवाबदेही और समावेशिता को बढ़ावा देना ।
- शैक्षिक सुधार:
 - पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों का विकास या संशोधन जो विभिन्न समुदायों के बीच शांति, सहिष्णुता, सम्मान और विविधता की संस्कृति

को बढ़ावा देते हों।

- सांप्रदायिकि सद्भाव और सह-अस्तित्व पर शक्तिषकों, छात्रों, अभिभावकों, मीडिया आदि का प्रशिक्षण या संवेदीकरण। अंतर-सामुदायिकि संवाद और आदान-प्रदान के अवसरों का नरिमाण या वस्तितार करना।

■ सामाजिक सुधार:

- वभिनिन समुदायों के बीच सामाजिक पूंजी और वशिवास का नरिमाण या पुनरनरिमाण करना। सांप्रदायिकि सद्भाव और सह-अस्तित्व को बढ़ावा देने के लयि गैर-सरकारी संगठनों, धार्मिकि नेताओं, महिला समूहों, युवा समूहों आदि नागरिकि समाज के अभकिरताओं की लामबंदी या भागीदारी।
- भारत के समाज और संस्कृतमें वभिनिन समुदायों के योगदान एवं उपलब्धियों को चहिनति करना या उनके प्रति सम्मान-भाव प्रकट करना।

■ आर्थिक उपाय:

- वभिनिन समुदायों के बीच आर्थिक स्थितियों और अवसरों का सुधार या पुनरवतिरण।
- हाशयि पर स्थिति समूहों के बीच गरीबी, असमानता, भेदभाव आदि का उन्मूलन करना।
- वभिनिन समुदायों के बीच आर्थिक सहयोग और सहकार्यता को सुगम बनाना या उन्हें एकीकृत करना।

■ सांस्कृतिकि उपाय:

- भारत में सांस्कृतिकि वविधिता और बहुलवाद का संरक्षण या पुनरस्थापना। वभिनिन समुदायों की सांस्कृतिकि वरिासत और पवतिर स्थलों का संरक्षण या संवर्द्धन।
- वभिनिन समुदायों के बीच सांस्कृतिकि आदान-प्रदान और नवाचार को प्रोत्साहन देना या उनकी सराहना करना।

■ समुदाय की संलग्नता:

- स्थानीय सामुदायिकि नेता, धार्मिकि हस्तियों और नागरिकि समाज संगठन अंतर-धार्मिकि संवाद एवं समझ को बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका नभिा सकते हैं।
- ज़मीनी स्तर के प्रयास धार्मिकि मतभेदों से परे संबंधों को बढ़ावा दे सकते हैं।

■ मीडिया की ज़मिमेदारी:

- मीडिया आउटलेट्स की ज़मिमेदारी है कि वे सांप्रदायिकि तनाव को भड़काने वाले सनसनीखेज और पक्षपातपूर्ण कवरेज से बचते हुए नषिपक्षता और उत्तरदायित्व से रिपोर्टि करें।

आगे की राह:

■ सामाजिकि संसंजन या एकता को बढ़ावा देना:

- धार्मिकि संबद्धताओं से परे एक मज़बूत राष्ट्रीय पहचान के नरिमाण की दशिा में प्रयास कयिे जाने चाहयि।
- सांस्कृतिकि वविधिता का उत्सव मनाने और एकता की भावना को बढ़ावा देने से सांप्रदायिकि वभिाजन को दूर करने में मदद मलि सकती है।

■ आर्थिकि सशक्तीकरण:

- अवसरों तक समान पहुँच सुनिश्चिती करने वाली नीतियों के माध्यम से आर्थिकि असमानताओं को हल करने से वंचना या हाशयि पर स्थिति होने की भावनाओं को कम कयिा जा सकता है और अधिकि समावेशी समाज का नरिमाण कयिा जा सकता है।

■ युवा संलग्नता:

- शांति, सहषिणुता और एकता को बढ़ावा देने वाले साधनों के साथ युवाओं को सशक्त बनाना इन मूल्यों को अपने अंदर बनाए रखने वाली पीढ़ी के पोषण के लयि आवश्यक है।

अभ्यास प्रश्न: भारत में सांप्रदायिकि हसिा एक आवरती घटना है। टपिपणी कीजयि।

यूपीएससी सविलि सेवा परीक्षा, वगित वरष के प्रश्न

??????:

प्र. क्या भारत में वविधिता एवं बहुलवाद वैश्वीकरण के कारण खतरे में हैं? औचित्यपूर्ण उत्तर दीजयि। (2020)